संरक्षण एवं मार्गदर्शन

श्री राजेश सिंह राणा

संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़ रायपुर

डॉ. योगेश शिवहरे

अतिरिक्त संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़ रायपुर

श्रीमती पुष्पा किस्पोट,टा

उपसंचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़ रायपुर

एवं

प्राचार्य

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान कोरबा

समन्वयन

श्री डी दर्शन

नोडल अधिकारी

स्कूल लीडरशिप अकादमी

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़ रायपुर

लेखन समन्वयन

श्री गौरव शर्मा

व्याख्याता डाइट कोरबा

लेखक

प्रद्युम्न कुमार शर्मा व्याख्याता डाइट जांजगीर

जिला जांजगीर –चाम्पा छ.ग.

शीर्षक

विद्यार्थियों के अधिगम प्रतिफल के विकास में विद्यालय प्रमुख की भूमिका प्राथमिक स्तर के सन्दर्भ में

चिंतन अवकाश

संस्था प्रमुख निम्नाकित प्रश्नों का गहन अध्ययन कर समाधान की दिशा में चिंतन करने का प्रयास करें –

- क्या हमें विद्यार्थियों के वास्तविक अधिगम प्रतिफल स्तर की जानकारी है ?
- क्या हमारे शिक्षक गण विषयों के ज्ञान एवं शिक्षक अधिगम प्रक्रियाओं के ज्ञान से परिपूर्ण हैं ?
- क्या हमारा विद्यालय विद्यार्थिओं को अधिगम अवसर प्रदान करने तथा शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओ के संचालन करने हेतु भौतिक ,संज्ञानात्मक एवं सःसंज्ञानात्मक रूप से संसाधन युक्त और उपयुक्त है ?
- क्या शिक्षक गण प्रति दिवस कक्षा कक्ष में अध्यापन कार्य प्रारंभ करने के पूर्व गतिविधि आधारित शिक्षण योजना की तैयारी करते हैं ?
- क्या विद्यालय में विद्यार्थियों के नियमित आंकलन मूल्यांकन की प्रक्रिया संचालित है ? क्या अधिगम प्रतिफल का क्रमिक विकास संधारित है ?

क्षेत्र

अधिगम प्रक्रिया का रूपांतरण

उदेश्य

1 विद्यालय प्रमुख विद्यार्थियों में अधिगम की दर में सतत वृद्धि कर सकेंगे |

2 विद्यालय प्रमुख शिक्षकों में शिक्षण कौशलों का विकास कर सकेंगे |

3 संस्था प्रमुख शिक्षकों को अधिगम प्रतिफल आधारित शिक्षण योजना का निर्माण करने हेतु प्रेरित कर पाएंगे |

4. विद्यार्थियों के लिए नियमित आकलन की प्रक्रिया अपने अपनाई जा सकेगी |

5. संस्था प्रमुख बच्चों की सीखने की आवश्यकताओं के सन्दर्भ में शिक्षकों का शिक्षण अधिगम प्रविधियों एवं सामग्री में बदलाव कितना प्रभावी है समझ सकेंगे |

की वर्ड

अधिगम प्रतिफल , शिक्षण कौशल , शिक्षण योजना , शिक्षण अधिगम प्रक्रिया , आंकलन एवं मूल्यांकन

1. NAS REPORT LINK – https://nas.gov.in/report-card/nas-2021
2. FLS REPORT LINK - https://nipunbharat.education.gov.in/fls/RCard.aspx

परिचय

उपरोक्त लिंक का अध्ययन करे तथा विद्यार्थियों के अधिगम प्रतिफल के विकास में बाधक प्रमुख कारणों का विश्लेषण करने का प्रयास करें | उपर्युक्त विभिन्न शैक्षिक सर्वे रिपोर्ट एवं मोनिटरिंग के दौरान यह बात स्पष्ट है की विद्यार्थियो में अपेक्षित स्तर का आभाव है |

यदि हम सभी शिक्षक गण स्वमूल्यांकन करें तो हम यह पाते है कि विद्यार्थियों में उन सभी व्यावहारिक मूल्यों का अभाव है जिसका हमें हमारे दैनिक जीवन में उपयोग करना होता है वर्तमान विद्यालयीन शिक्षण प्रक्रिया में हम पाठ्यक्रम के सिधान्तों को अपने व्यावहारिक जीवन का अंग नहीं बना पा रहें है | यदि हम उपरोक्त तथ्यों पर चिंतन मनन करें तो संस्था प्रमुख के साथ साथ शिक्षक समूहों तथा जन समुदाय में कौशलो , तकनीकियों , शिक्षण प्रक्रियाओं, विधियों के ज्ञान का अभाव है | शिक्षक गण अपनी कक्षाओं में पाठ्यचर्या,पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक विषयवस्तुओं में निहित उदेश्यों की प्राप्ति और पूर्ति नहीं कर पातें हैं या हम ऐसा भी कह सकते हैं कि विद्यार्थी गण गुणवत्ता युक्त शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते हैं | चूकि संस्था प्रमुख संस्था का एक महत्वपूर्ण एवं जिम्मेदार व्यक्ति होता है, जिनका यह दायित्व होता है की वह अपने विद्यालय में उपयुक्त शैक्षिक अधिगम वातावरण निर्मित करे एवं गुणवत्तायुक्त शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया एवं शिक्षा का समुचित प्रबंधन करें ताकि विद्यार्थियों में अपेक्षित स्तरानुसार उपलब्धियों की प्राप्ति हो सके | इस हेतु संस्था प्रमुख को अपने संस्थान के समस्त सदस्यों एवं विद्यार्थियों की अवश्यकताओ को ध्यान में रख कर समन्यवयन के साथ जिम्मेदारियां तय करनी पड़ेगी | प्रायः यह देखा जाता है की वर्तमान समय में विद्यालय की कक्षाओं में शिक्षक गण अध्यापन कार्य करते समय विद्यार्थिओं का आंकलन शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के अनुरूप नही कर पाते हैं तथा उनमें शिक्षण अधिगम प्रक्रिया संचालित करने के ज्ञान का अभाव होता है | इसी प्रकार प्रक्रिया के अंतर्गत वे विभिन्न तकनीकियों

, कौशलों , विधियों का अनुप्रयोग नहीं कर पाते हैं या हम यह कहें कि विद्यार्थियों के ज्ञान अर्जन की प्रक्रिया में मदद नहीं कर पातें हैं जिससे अपेक्षित अधिगम प्रतिफल की प्राप्ति नहीं हो पाती है | कक्षा कक्षा में विषयवास्तु का चयन ,उदेश्यों की प्राप्ति के लिए पाठ योजना का निर्माण , सीखने के लिए गतिविधियों का चयन ,विषय वस्तु की अवधारणा को व्यक्त करने के लिए उपयुक्त शिक्षण अधिगम सामग्री का चयन, आकलन हेतु उपकरणों के साथ उचित प्रक्रियाओं का चयन तथा इसके पश्च्यात उन विद्यार्थियों के लिए जो सीख नहीं सके उनके लिए उपचारात्मक शिक्षण का क्रियान्वयन किया जाना अति आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है | साथ ही अधिगम प्रतिफल के लिए कक्षा कक्ष का वातावरण, संसाधनों का प्रबंधन विद्यार्थियों के सतत प्रगति का प्रोफाइल ,अभिवावकों जनसमुदायों को शिक्षा की समझ व जनसंचेतना की आवश्यकता होगी तभी विद्यार्थियों की आवश्यकता के अनुरूप शिक्षण प्रक्रिया में रूपांतरण संभव हो सकता है | एक संस्था प्रमुख को अधिगम के विकास के लिए उपर्युक्त सभी तथ्यों पर ध्यान दिया जाना चाहिए| इस सन्दर्भ में संस्था प्रमुखों को स्वयं को अद्यतन रखने के साथ साथ अपने शिक्षकों को शिक्षण प्रक्रिया का उचित मार्गदर्शन देने हेतु विभिन्न तथ्यों व उपकरणों को स्थान दिया गया है जिसका उपयोग संस्था प्रमुख अपने विद्यार्थिओं के साथ साथ अपने शिक्षकों को भी सतत अधिगम, ज्ञान , मूल्य के विकास के लिए प्रेरित कर सकते हैं |

पठन सामग्री को रटकर याद करने पर आधारित मूल्यांकन से दूर हटाने के लिए अधिगम प्रतिफल को विकसित किया गया है | योग्यता (अधिगम प्रतिफल) आधारित मूल्यांकन पर जोर दे कर शिक्षकों और पूरी व्यवस्था को यह समझने में मदद की गयी है ,कि बच्चे ज्ञान ,कौशल और सामाजिक व्यक्तिगत गुणों और दृष्टिकोणों में परिवर्तन के मामले में वर्ष के दौरान एक विशेष कक्षा में क्या हासिल करेंगे | अधिगम प्रतिफल ज्ञान और कौशल से परिपूर्ण ऐसे कथन हैं जिन्हें बच्चों को एक विशेष कक्षा या पाठ्यक्रम के अंत तक प्राप्त करने की आवश्यकता है और यह अधिगम संवर्धन की उन शिक्षणशास्त्रीय विधियों से समर्थित है, जिनका क्रियान्वयन शिक्षकों द्वारा करने की आवश्यकता है | ये कथन प्रक्रिया आधारित हैं और समग्र विकास के पैमाने पर बच्चे की प्रगति का आकलन करने के लिए गुणात्मक या मात्रात्मक दोनों तरीके से जाँच योग्य बिंदु प्रदान करते हैं |

संस्था प्रमुख के समक्ष चुनौतियाँ

- शिक्षकों की शिक्षण शास्त्र अंतर्गत दक्षता एवं शिक्षण कुशलता का अभाव|
- शिक्षकगण बच्चों की समझ और अधिगम प्रतिफल के अनुरूप स्तरानुकूल जानकारी, बच्चों की वास्तविक स्तर और क्षमता से परिचित नहीं हैं|
- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में आवश्यकतानुसार बदलाव करने की कुशलता का अभाव हैं |
- माता पिता एवं जन समुदाय में विद्यालय के शैक्षिक गतिविधियों के प्रति रुझान नहीं है तथा शैक्षिक जागरूकता का अभाव है |
- शिक्षकों द्वारा अधिगम प्रतिफल आधारित दैनिक शिक्षण योजना का निर्माण नहीं किया जाता है, और न ही उनके द्वारा पूर्व तैयारी की जाती है |
- आकलन एवं मूल्यांकन प्रक्रिया का स्वरूप उबाऊ ,अनियमित तथा अरुचिपूर्ण है |
- शिक्षक बच्चों के समझ स्तर के अनुरूप अध्यापन कार्य नहीं करते हैं |
- अध्यापन प्रक्रिया के दौरान शिक्षक, शिक्षण अधिगम सामग्री का उपयोग नहीं करते हैं|
- कमजोर विद्यार्थिओं के लिए अधिगम प्रबंधन / उपचारात्मक शिक्षण का अभाव है |

मुख्य सामग्री

कक्षा कक्ष अध्यापन परिस्थिति एक

कक्षा 5 में श्री मान रमन अपने विद्यार्थियों को पोधों के विभिन्न भागों के बारे में सिखाने के लिए शिक्षण कर रहे थे | वे पोधों के विभिन्न भागों की कुछ इस प्रकार व्याख्या कर रहे थे – जैसे ये जड़ है , ये तना है ,ये पत्ती है ,ये फूल है और ये बीज है| श्री मान रमन ये सब ब्लेकबोर्ड पर पौधे का एक चित्र बना कर रहे थे | वे अवसरानुकूल बच्चों से प्रश्न पूछ रहे थे | ये सुनिश्चित करने के लिए की बच्चे अवधारणा को समझ भी रहे हैं कि नहीं | कभी कभी बच्चों के साथ मजकिया तरीके से पेश आ रहे थे और कभी कभी वे उन बच्चों का ध्यान श्यामपट की ओर देने को कह रहे थे जो बेपरवाह थे | और अंत में निष्कर्ष के रूप में उन्होंने कक्षा के बच्चों को पौधे के विभिन्न भागों को कक्षा में ले कर आने को कहा |

कक्षा कक्ष अध्यापन परिस्थिति दो

एक अन्य कक्षा में मिस सीमा इसी प्रकरण का शिक्षण कर रही थी जैसे विभिन्न तरीकों से पौधे के विभिन्न भागों की पहचान करना | उसने बच्चों को ये पहले ही सूचित कर दिया था की सभी बच्चे अपने घर से एक एक पौधा कक्षा में ये कर आयें | उसने बच्चों को पांच छोटे समूहों में बाँट दिया और कागज के तुकडे पर प्रत्येक समूह को पांच पौधे का चित्र बनाने के लिए कहा और पौधों में रंग भर कर उनके विभिन्न भागों पर लेबल लगाने के लिए कहा | समूहों के द्वारा कार्य करने के बाद मिस सीमा ने उन शीटों को दीवार पर लगा दिया जिससे अन्य बच्चे भी एक दूसरे की शीट देख सके | कक्षा के अंत में जब सीमा ने आम के पेड़ के चित्र के विभिन्न भागों पर लेवल लगाने के लिए कहा ,तो बच्चों के बीच में इस कार्य को करने के होड़ सी मच गयी |

उपर्युक्त दोनों परिस्थितियों का अध्ययन कीजिये तथा बताईए कि –

1 क्या बच्चे सीख रहे थे ?

2 क्या बच्चों को कक्षा कक्ष में सीखने का अवसर मिल रहा था ?

3 कक्षा कक्ष में शैक्षिक वातावरण किस प्रकार का था ?

4 दोनों परिस्थितियों के शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं में प्रमुख अंतरों को स्पष्ट कीजिये |

सन्दर्भ – राज्य शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् रायपुर , सामाजिक,सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में संज्ञान एवं अधिगम प्रकाशन वर्ष 2018

https://youtu.be/HROUnSxUuXs Dhvani Cetna - Archana Sharma shiksha jyoti bharat

https://youtu.be/9Nvxdo4tXLM GULJAR BARETH A.T. GOVT.P.S. AMODI

अधिगम प्रतिफल प्राप्ति की दिशा में किये जाने वाले सार्थक प्रयास

अध्ययन सामग्री – प्राथमिक स्तर पर सीखने के प्रतिफल कक्षा 1 से 5 – राज्य शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़ रायपुर 2017

संस्था प्रमुख उपर्युक्त सामग्री का अध्ययन कर अधिगम प्रतिफल की अवधारणा स्पष्ट कर सकते हैं |

विद्यालय में अधिगम वातावरण निर्मित करना व्यावहारिक रूपांतरण के लिए शिक्षण करना-

शिक्षण में विद्यार्थी अनुकूल विधियों का प्रयोग करना जैसे – खेलविधि ,समस्या समाधान विधि ,प्रोजेक्ट विधि ,अन्वेषण विधि |

विद्यार्थी केन्द्रित उपागम –

विद्यार्थी केंद्र में होता है इसमें विद्यार्थी के विकासात्मक स्तरों परिपक्वता, अधिगम युक्तियों ,पूर्व ज्ञान व अनुभवों, रुचिओं, सामाजिक सन्दर्भ और संस्कृति पर ध्यान दिया जाता है| एक संस्था प्रमुख के रूप में विद्यार्थी केन्द्रित उपागमों को क्रियान्वित करने के लिए विद्यार्थियों को और उनके अधिगम तरीकों को समझना अत्यंत आवश्यक है| कक्षा के प्रत्येक विद्यार्थी के विशेषताओं के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी रखने की आवश्यकता है |

अधिगम केन्द्रित शिक्षा –

संस्था प्रमुख को अधिगम प्रक्रिया पर ध्यान देने की आवश्यकता है | वे अध्यापकों को प्रेरित करें ताकि अध्यापक भी विद्यार्थियों के साथ सह शिक्षार्थी के रूप में जुड़े | यह कौशलीय दक्षता को अर्जित करने में सहायक होता है |

सहकारी अधिगम –

शैक्षणिक उपलब्धियों विभिन्नता की स्वीकृतियां तथा सामाजिक कौशल का विकास लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए उपयोग में लाया जाता है | इस उपागम में प्रजातान्त्रिक प्रक्रिया व्यक्तिगत जिम्मेदारी सामान अवसर निहित है |

सहयोगात्मक अधिगम –

इस उपागम में दो या दो से अधिक व्यक्तियों को सीखने में या एक साथ सीखने के लिए प्रयासरत होने के लिए अवसर उपलब्ध करता है| इसमें वे एक दूसरे के संसाधन और कौशलों का लाभ उठाते हुए सीखते हैं|

क्रियाकलाप आधारित उपागम –

शिक्षार्थी अपनी आवश्यकता रूचि मानसिक क्षमता और सामाजिक सन्दर्भ के अनुसार क्रियाकलाप में संलग्न रह कर ज्ञान का सृजन करता है |

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का प्रबंधन –

संस्था प्रमुख के समक्ष शिक्षण अधिगम प्रक्रिया से सम्बन्धित विभिन्न समस्याएँ एवं मूलभूत आवश्यकताओं की कमियां होती हैं जैसे सुनिश्चिता ,सुरक्षित एवं सहानुभूतिपूर्ण वातावरण ,पर्याप्त शिक्षण , अधिगम सामग्री ,अच्छे विद्यार्थी – विद्यार्थी और शिक्षक सम्बन्ध ,रुचिपूर्ण शिक्षण अधिगम प्रक्रिया एवं विद्यार्थियों के बीच अनुशासन | प्रभावशाली शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के साथ साथ कक्षा प्रबंधन के विभिन्न पहलू अधिगम के लिए सहानुभूति पूर्ण वातावरण का निर्माण करना , प्रत्येक विद्यार्थी को सहभागिता के लिए प्रोत्साहित करना , कक्षा में परस्पर क्रिया को बढ़ावा देना , स्वस्थ अंतर्व्यव्यक्तिक संबंधों को संभालना ,अधिगम के प्रकरण पर ध्यान केन्द्रित करना , अनुशासनहीनता की समस्याओं का समाधान करना इत्यादि के लिए योजना बनाने और सुविधा प्रदान करने की योग्यता की आवश्यकता होती है | कुछ प्रमुख प्रबंधन इस प्रकार हैं – अधिगम परिस्थितियों का प्रबंधन , व्यक्तिगत अधिगम का प्रबंधन , सामूहिक अधिगम का प्रबंधन , समय का प्रबंधन, कक्षा कक्ष के स्थान का प्रबंधन , विद्यार्थी प्रेरणा प्रबंधन ,कक्षा कक्ष में अनुशासन प्रबंधन |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार सभी चरणों में पाठ्यचर्या और शिक्षा शास्त्रीय सुधर का प्रमुख बल शिक्षा प्रणाली को वास्तविक समझ और अधिगम के तरीके यानी कैसे सीखें की ओर ले जाना होगा लक्ष्य 21वीं सदी के प्रमुख कौशलों की परिपूर्णता के साथ समग्र रूप से सक्षम व्यक्ति बनाना होगा |

संस्था प्रमुख दिए गए कौशलों के आधार पर शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का स्वमूल्यांकन कर क्रमिक विकास की योजना बना सकते हैं -

ओईसीडी द्वारा दिए गए 21 सदी के कौशल ,अधिगम के भविष्य पर यूनेस्को वर्किंग पेपर्स एन.ई.पी. 2020 के अनुसार निर्धारित कौशल निम्नाकित हैं –

1. समूहों और दलों में भागीदारी
2. सृजन का सार्थक प्रयोग
3. वास्तविक जीवन में समस्याओं का समाधान
4. नए ज्ञान के सृजन /विकास के लिए नवाचारों की खोज और उनका प्रयोग

5. स्वतन्त्र चिंतन और कार्यवाही
6. सम्प्रेषण की क्षमता
7. सूचना प्रक्रिया की दक्षता
8. व्यावसायिक कौशलों का निर्माण
9. नीति मूलक मूल्यों और सामाजिक प्रभावों को समझने की दक्षता
10. परिवर्तन का अनुकूलन
11. नेतृत्वकारी कौशलों का निर्माण
12. डिजिटल साक्षरता बढ़ाना

इसी प्रकार विश्व आर्थिक मंच ने भी निम्नलिखित प्रमुख दस कौशलों की पहचान की है जिनकी विद्यार्थियों को 2025 तक आवश्यकता होगी ये कौशल निम्नांकित हैं –

1. विश्लेषात्मक चिंतन और नवाचार
2. सक्रिय अधिगम और अधिगम की कार्यनीतियाँ
3. जटिल समस्याओं का समाधान
4. आलोचनात्मक चिंतन और विश्लेषण
5. सृजनात्मकता ,मौलिकता और पहल
6. नेतृत्व और सामाजिक प्रभाव
7. प्रौद्योगिकी प्रयोग, निगरानी और नियंत्रण
8. प्रौद्योगिकी डिज़ाइन और प्रोग्रामिंग
9. प्रत्यास्थता ,तनाव सहनशीलता और लचीलापन
10. तार्किक समस्या समाधान प्रत्ययन

संस्था प्रमुख विद्यार्थियों के अधिगम प्रतिफल में उत्तरोत्तर विकास के लिए शिक्षकों को निम्न प्रारूप में दैनिक शिक्षण योजना के अनुरूप शिक्षण अधिगम प्रक्रिया हेतु प्रेरित कर सकते हैं –

अभ्यास कार्य 1. –

प्राथमिक स्तर पर सीखने के प्रतिफल कक्षा 1 से 5 पुस्तिका का प्रयोग करते हुए नीचे दिए गए सारिणी के क्र. 3 पर वर्णित अधिगम प्रतिफल के आधार पर एक दैनिक शिक्षण योजना का निर्माण कीजिये –

सारिणी क्र. 1.

1.	2.	3.	4.	5.	6.	7.	8.
क्र.	कक्षा एवं विषय का चयन	अधिगम प्रतिफल का विवरण	अधिगम प्रतिफल क्रमांक	कौशल जिसे सीखने में मदद करना है -	कौशल सीखने हेतु गतिविधि का चयन	विषय वस्तु की अवधारणा स्पष्ट करने हेतु टी.एल.एम. का चयन	जिन बच्चों ने नहीं सीखा उनके लिए शिक्षण योजना एवं नई रणनीति
		बच्चे • सामान्य रूप से अवलोकन द्वारा पहचाने जाने वाले लक्षणों (आकार , रंग ,बनावट, गंध) के आधार पर अपने आस पास के परिवेश में उपलब्ध पेड़ों की पत्तियों ,तनों ,एवं छाल को पहचानते हैं ।					

अभ्यास कार्य 2. –

दिए गए सारिणी के अनुरूप प्राथमिक स्तर पर अधिगम प्रतिफल आधारित दैनिक शिक्षण योजना का निर्माण कीजिये -

विद्यालय का नाम कक्षा विषय

क्र.	दिनांक	क्या सिखायेंगे (कौशल जो विकसित किये जायेंगें Lo)	कैसे सिखायेंगे (गतिविधि)	शिक्षण अधिगम सामग्री जो उपयोग करेंगें	बच्चों ने क्या सीखा	कितने बच्चों ने सीखा	बच्चों को सीखने में क्या कठिनाईयों आईं	अगले दिन के पाठ योजना में क्या परिवर्तन करना चाहेंगे

संस्था प्रमुख अपने क्रमिक प्रगति एवं स्वमूल्यांकन / आकलन के लिए समय समय पर निम्न रेटिंग स्केल का उपयोग एवं अभ्यास कार्य कर अपने क्षमता का विकास कर सकेंगे -

संस्था प्रमुख के द्वारा अग्रलिखित मूल्यांकन मापक (शिक्षा शास्त्रीय नेतृत्व: विद्यालयों में अधिगम नेतृत्व के लिए हस्तपुस्तिका) के अंतर्गत अनुलग्न : 1 ,विवरणक 2 स्कूल में नवाचारों की पहल , विवरणक 3 शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का नेतृत्व करना , विवरणक 4 – अधिगम की संस्कृति का विकास करना , विवरणक 5 – समावेशी संस्कृति का निर्माण पृष्ठ क्रमांक 78 से 85 अधिगम नेतृत्व के लिए शिक्षा शास्त्रीय नेतृत्व का कार्यव्यवहार करने की वर्तमान स्थिति का मूल्यांकन करने के लिए मूल्यांकन मापक (रेटिंग स्केल) का उपयोग किया जा सकता है |

छत्तीसगढ़ स्कूल लीडरशिप अकादमी एस.सी.ई.आर.टी. एवं ट्रांसफॉर्म स्कूल्स के संयुक्त तत्वाधान में विद्यालय प्रमुख दक्षता प्रारूप सत्र 2021 – 22 के पृष्ठ क्र. 14 से 16 में उल्लेखित अकादमिक नेतृत्व के मानक क्र. 1 से 4 तक का उपयोग संस्था प्रमुख स्व आकलन हेतु कर सकते हैं तथा विद्यार्थियों के अधिगम प्रतिफल में समुचित विकास कर सकते हैं |

शाला सिद्धि सुधार हेतु मूल्यांकन स्कूल मानक एवं मूल्यांकन की रूपरेखा – स्कूल मानक एवं मूल्यांकन इकाई –राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन विश्वविद्यालय ,नई दिल्ली 2015 मुख्या आयाम 2 एवं 3

सामान्यीकरण

शिक्षण शास्त्रीय नेतृत्वत्वकर्ता के रूप में एक संस्था प्रमुख का कर्त्तव्य एवं जिम्मेदारी महत्वपूर्ण है अतः संस्था प्रमुख को अपने विद्यालय का नेतृत्व करते हुए अग्रलिखित कार्य करने की आवश्यकता है –

शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओ की जानकारी विद्यालय में शैक्षिक वातावरण का निर्माण करना ,शिक्षकों के शिक्षण कौशल एवं बच्चों के अधिगम स्तर में वृद्धि करना , कक्षा कक्ष को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के अनुरूप संसाधन युक्त बनाना , संस्था प्रबंधन के साथ साथ शिक्षकों के व्यक्तिगत प्रबंधन, समय प्रबंधन , गुणवत्तापूर्ण आंकलन एवं मूल्यांकन प्रक्रियाओ का प्रबंधन, शिक्षकों के लिए समय समय पर क्षमता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रबंधन ,शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के शैक्षिक सहयोग के लिए जन सहयोग कार्यक्रमों का आयोजन शिक्षकों को अद्यतन होने के लिए समस्त शासकीय योजनाओं का संधारण कार्य |

यदि संस्था प्रमुख विद्यालयों , शिक्षकों विद्यार्थियों के आवश्यकता के अनुरूप प्रोफाइल का संधारण करते हुए गुणवत्तायुक्त प्रबंधन करें तो निसंदेह ही विद्यार्थियों के अधिगम प्रतिफल में उत्तरोत्तर विकास किया जा सकता है |

संप्राप्ति

- विद्यार्थियों के वास्तविक अधिगम स्तर को ज्ञात किया जा सकेगा |
- शिक्षक गण संस्था प्रमुख के सहयोग से शिक्षण अधिगम की प्रक्रियाओं से परिचित हो सकेंगे |
- शिक्षक गण संस्था प्रमुख के सहयोग से अधिगम प्रतिफल आधारित दैनिक शिक्षण योजना का निर्माण कर सकेंगे |
- विद्यार्थियों के नियमित आकलन से उनके अधिगम स्तर में विकास किया जा सकेगा |

स्वमूल्यांकन

उत्तर हेतु प्रश्न के समक्ष हाँ या नहीं लिखिए –

1 शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की साझी समझ विकसित की जा सकती है – .....

2 कक्षा कक्षा में विद्यार्थियों के अधिगम हेतु अनुकूल वातावरण का निर्माण किया जाना चाहिए .....

3 शिक्षकों को चिंतनशील व्यवहारकर्ता बनने के लिए संस्था प्रमुख को प्रोत्साहित करना चाहिए .....

4 माता पिता को अपने बच्चे की शैक्षिक यात्रा में सक्रिय भागीदार बनाना चाहिए .....

5 संस्था प्रमुख को समावेशी शिक्षण पद्धतियों को अपनाना चाहिए .....

6 नवाचारी शिक्षाशास्त्रीय विधियों के क्रियान्वयन के लिए शिक्षकों के दृष्टिकोणों का विस्तार किया जाना चाहिए .....

7 कक्षा कक्ष में नवाचारी अधिगम की प्रक्रियाओं को गति प्रदान करना चाहिए .....

सन्दर्भ –

1. NAS REPORT LINK – https://nas.gov.in/report-card/nas-2021
2. FLS REPORT LINK - https://nipunbharat.education.gov.in/fls/RCard.aspx
3. **https://youtu.be/HROUnSxUuXs Dhvani Cetna - Archana Sharma shiksha jyoti bharat**
4. **https://youtu.be/9Nvxdo4tXLM GULJAR BARETH A.T. GOVT.P.S. AMODI**
5. **अध्ययन सामग्री – प्राथमिक स्तर पर सीखने के प्रतिफल कक्षा 1 से 5 – राज्य शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़ रायपुर 2017**
6. **डिप्लोमा इन एजुकेशन दूरस्थ शिक्षा पद्धति डी.एड. शिक्षा में पत्रोपाधि – पाठ्यक्रम एवं विद्यालयीन कार्यों पर चिंतन एवं मनन –मार्गदर्शिका प्रकाशन वर्ष 2013 – राज्य शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् रायपुर छ . ग .**
7. **छत्तीसगढ़ स्कूल लीडरशिप अकादमी एस.सी.ई.आर.टी. एवं ट्रांसफॉर्म स्कूल्स के संयुक्त तत्वाधान में विद्यालय प्रमुख दक्षता प्रारूप सत्र 2021 – 22**
8. **शिक्षा शास्त्रीय नेतृत्व: विद्यालयों में अधिगम नेतृत्व के लिए हस्तपुस्तिका – हिंदी संस्करण : अगस्त ,2021 – प्रकाशक : सचिव केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ,शिक्षा सदन ,2 सामुदायिक केंद्र ,प्रीत विहार दिल्ली -110092 एवं राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशाशन संस्थान ,नई दिल्ली**
9. **निष्ठा – स्कूल प्रमुखों और शिक्षकों की समग्र उन्नति के लिए राष्ट्रीय पहल – प्रशिक्षण पैकेज – राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् 2019**
10. **शाला सिद्धि सुधार हेतु मूल्यांकन स्कूल मानक एवं मूल्यांकन की रूपरेखा – स्कूल मानक एवं मूल्यांकन इकाई –राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन विश्वविद्यालय ,नई दिल्ली 2015**